

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- [dhabeerparasad@gmail.com](mailto:dhabeerparasad@gmail.com)

---

### INSIGHT LEARNING

सीखने की अंतर्दृष्टि का प्रतिपादन 1917 ई. में कोहलर ने किया। कुछ प्रयोगों के आधार पर वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सिखने की प्रक्रिया में बुद्धि एवं सूझबूझ की अत्यंत आवश्यकता होती है। उन्होंने कुछ प्रयोग वनमानुषों पर किया और पाया कि वनमानुष जो कुछ सीखते हैं, उनमें बुद्धि एवं सूझबूझ की आवश्यकता परती है। इसलिए इस अधिगम को अंतर्दृष्टि अथवा सूझबूझ का सिद्धांत भी कहा गया।

कोहलर ने अपने प्रयोग में एक वनमानुष को एक पिंजरे में बन्द कर दिया तथा कुछ दूरी पर एक केला रख दिया जो पिंजरे से दिखाई दे रहा था। पिंजरे में एक छड़ी रख दिया तथा पिंजरे में अधिक स्थान भी रखा गया ताकि वह उसमें उछल-कूद कर सके। पिंजरे के अंदर बन्द वनमानुष केले को देखकर उछल-कूद करने लगा तथा उसे पाने का प्रयास करने लगा। किन्तु कुछ देर तक सफलता नहीं मिलने पर उसमें एक सूझ उत्पन्न हुई। उसने तुरंत छड़ी की सहायता से केले को अपनी ओर खींच लिया और खा लिया।

कोहलर ने अपने दूसरे प्रयोग में केले को पिंजरे से अधिक दूरी पर रखा और पिंजरे में इस बार एक छड़ी के स्थान पर दो छड़ियाँ रखी जो कि हिलाने-डुलाने पर आपस में जुड़कर लम्बी हो सकती थी। वनमानुष ने पूर्व के भांती उस छड़ी का प्रयोग किया किन्तु केला पाने में सफलता नहीं मिली वह पिंजरे के अंदर उछल-कूद करने लगा ऐसा करते-करते दोनों छड़ियाँ आपस में जुड़कर लम्बी हो गयी।

वनमानुष ने अपने सूझ का प्रयोग करते हुए तुरंत उसका प्रयोग कर केला अपने ओर खिच लिया और खा लिया। इसबार केले को खीचने में पहले के अपेक्षा कम समय लगा।

कोहलर ने सूझ के द्वारा सीखने संबंधी एक अन्य प्रयोग किया। इस बार पिंजरे में कड़ियों के जगह पर लकड़ी के संदूकों को रखा तथा केलों को पिंजरे से बाहर के वजाय पिंजरे के अंदर छत से लटका दिया। इस बार वनमानुष ने कुछ देर तक प्रयास किया तत्पश्चात् उसने रखें हुए लकड़ी के संदूकों को एक के उपर एक रख दिया और उसपर चढ कर केले को उतार लिया और खा लिया।

इस प्रकार किये गये प्रयोगों के आधार पर कोहलर ने यह निष्कर्ष निकाला कि समस्याओं के अचानक समाधान हो जाने पर उसमें सूझबूझ का अधिक महत्व होता है। जिसे अंतर्दृष्टि की समझ कहा गया है।

कोहलर ने अंतर्दृष्टि अधिगम की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया है जो निम्न हैं :-

1. अंतर्दृष्टि मानव संबंधी पर्यावरण में अनुभव होने के साथ-साथ बढ़ती जाती है।
2. अंतर्दृष्टि में समस्या का समाधान अचानक होता है।
3. अंतर्दृष्टि में बौद्धिक स्तर के कई चरण हो सकते हैं।
4. अंतर्दृष्टि का संबंध बुद्धि एवं ज्ञान से होता है।
5. अंतर्दृष्टि के आधार पर परिस्थि का प्रत्यक्षीकरण एक संगठन के रूप में होता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि वास्तवमें अंतर्दृष्टि तब होती है जबकि सीखने वाला कार्य में छिपे हुए संबंध साहचर्य को देख लेता है। कुछ लोग इसे 'आहा' अनुभव भी कहते हैं। इसमें आप अनुभव करते हैं कि "अब आ गया"। अंतर्दृष्टि से सीखना के वक्र में एकाएक परिवर्तन होता है। अंतर्दृष्टि के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति समस्या से परिचित हो। नितान्त अपरिचित समस्या में अंतर्दृष्टि होना असम्भव है। जैसा साहित्य के विद्यार्थी को विज्ञान की समस्या में अंतर्दृष्टि नहीं हो सकती क्योंकि उसको विज्ञान का क, ख, ग का भी ज्ञान नहीं है। अतः अंतर्दृष्टि से सीखने वाले को समस्या से संबंध स्थापित करना आवश्यक है।